मङ्गलम्

ॐ स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।
पुनर्ददताघ्नता जानता संगमेमहि ॥1॥

(*ऋग्वेद - 5.51.15*)

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम ॥2॥

(*यजुर्वेद - 5.36*)

अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं पुरो यः।
अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु ॥3॥

(*अथर्ववेद - 19.15.6*)

भद्रमिच्छन्त ऋषयः स्वर्विदस्तपो दीक्षामुपनिषेदुरग्रे।
ततो राष्ट्रं बलमोजश्च जातं तदस्मै देवा उपसंनमन्तु ॥4॥

(*अथर्ववेद - 19.41.1*)

भावार्थः

सूर्य और चन्द्रमा के समान हम कल्याण के पथ का अनुगमन करें। निरन्तर दान करते हुए, टकराव/हिंसा को छोड़ कर परस्परिक तौर पर एक दूसरे को जानते/समझते हुए साथ-साथ चलें ॥1॥

हे अग्निदेव! हमें धन व ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए अच्छे मार्ग से ले चलें। आप सम्पूर्ण उत्तम मार्गों के ज्ञाता हैं। अतः हमें पापाचरण एवं कुटिल मार्ग से बचाएँ। हम आपको बहुत प्रकार से नमस्कार करते हैं ॥2॥

मित्रों, शत्रुओं तथा प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष अनिष्टों से हमें किसी प्रकार का भय न हो। हमें दिन और रात्रि में निर्भयता की प्राप्ति हो। अभय के लिए सभी दिशाएँ मित्रवत् कल्याणकारी हों ।।3।।

सबके हितचिन्तक आत्मज्ञानी ऋषि सृष्टि के प्रारम्भ में तप और दीक्षादि नियमों का पालन करने लगे। उसी से राष्ट्रीय भावना, बल और सामर्थ्य की उत्पत्ति हुई। अतएव ज्ञानी लोग उस (राष्ट्र) के समक्ष विनम्र हों (राष्ट्र सेवा करें)।।4।।